International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 498-499

परिजातहरण का साहित्यक विवेचन

डॉ० पुरुषोत्तम शर्मा

Teacher, Government Middle school Dramani Kathua, Jammu and Kashmir, India

प्रस्तवना

पारिजातहरण चम्पू का मूल स्रोत संस्कृत साहित्य में उपलब्ध विवरणों के अनुसार हरिवंशपुराण पद्मपुराण, विष्णुपुराण, भागवतमहापुराण है। महाकवि ने पारिजात नामक वृक्ष के संदर्भ विशेष में इस चम्पू की रचना कर पाँच उच्छवासों में विभक्त किया हैं हरिवंश पुराण के विष्णु पर्व में 64वें अध्याय से 76वें अध्याय तक पारिजात सम्बन्धी विवरण देखने को मिलता हैं हरिवंश पुराण के 64वें अध्याय में श्रीकृष्ण का नरकासुर के भवन में प्रवेश करके वहाँ के धन वैभव सहित सोलह हजार कुमारियों को द्वारका भेजना और स्वयं इन्द्र के साथ देवलोक में देवमाता अदिति के अत्यन्त समृद्धशाली दिव्यभवन में प्रवेश करके देवमाता अदिति को कवच कुण्डल देकर वहाँ से पारिजात लौटने का विवरण मिलता है।[1] 65वें अध्याय में रैवतक पर्वत्र पर रुक्मिणी का सम्मान और नारद जी द्वारा रुक्मिणी के सर्वाधिक सार्वभौम की प्रशंसा तथा सत्यभामा के कोपभवन में प्रवेश करने का वर्णन मिलता है।

हरिवंश पुराण के 66वें अध्याय में श्री कृष्ण का सत्यभामा को मनाना और सत्यभामा का खेद प्रकट करके उनसे तपस्या के लिये अनुमति माँगना वर्णित है।[2] 67वें अध्याय में श्रीकृष्ण के पूछने पर सत्यभामा का अपना रोष एवं खेद का कारण पारिजात पुष्प को बताना, श्रीकृष्ण का उनके लिये पारिजात वृक्ष को लाने का विश्वास दिलाकर, सत्यभामा को सन्तुष्ट करना वर्णित है। तत्पश्चात् सत्यभामा और श्री कृष्ण देवर्षि नारद का चिन्तन करते है। चिन्तन एवं प्रार्थना सुनकर मुनिश्रेष्ठ नारद का भगवान श्रीकृष्ण के पास आना, मुनि को देखकर सत्यभामा और श्रीकृष्ण नारद जी का आदर सत्कार करते हैं। तब देवर्षि द्वारा पारिजात की उत्पत्ति और महिमा का वर्णन प्राप्त होता है।[3] पारिजात की महिमा सुनने के उपरान्त भगवान श्री कृष्ण पारिजात वृक्ष माँगने के लिये नारद जी द्वारा इन्द्र के पास सन्देश भेजकर अपनी प्रतिज्ञा से अवगत कराते हैं और पारिजात न देने पर उन्हें गदा इत्यादि से युद्ध करने की धमकी देने का प्रसंग निहित है।[4]

नारद जी का इन्द्र को श्री कृष्ण का पारिजात के लिये प्रार्थना विषयक सन्देश सुनाना और इन्द्र द्वारा अनेक कारण बताकर पारिजात को न देने का विचार व्यक्त कर सत्यभामा के लिये पारिजात के अन्यथा जो भी वस्तुएँ मनुष्य योग्य है उन्हें देने का आग्रह वर्णित है, परन्तु श्रीकृष्ण के द्वारा गदा प्रहार की धमकी सुनकर इन्द्र देवर्षि से कृष्ण की कटु आलोचना करते है, और युद्ध किये बिना पारिजात वृक्ष को न देने का निश्चय प्रकट करते हैं। तत्पश्चात् देवर्षि नारद द्वारिका आकर इन्द्र का सन्देश श्रीकृष्ण को सुनाते हैं कि पराजित हुये बिना में पारिजात की एक पत्ती भी नहीं दूँगा। 72 वें अध्याय में श्रीकृष्ण का नारद जी अमरावती पर आक्रमण करने का निश्चय बताकर इन्द्र के पास सन्देश भेजना, इन्द्र और बृहस्पति की वातचीत, बृहस्पति का कश्यप जी को यह समाचार बताना और कश्यप जी का युद्ध की शान्ति के लिये भगवान शंकर की उपासना करते हैं।

हरिवंश पुराण के ही 73वें अध्याय में इन्द्र और श्रीकृष्ण[5], जयन्त और प्रद्युम्न, प्रवर–सात्यकि तथा ऐरावत और गरुड़ के युद्ध का प्रसंग वर्णित मिलता है।[6] युद्ध में पारियात्र पर्वत का पृथ्वी में धंस जाना और प्रद्युम्न द्वारा बलभद्र तथा कुकुरवंश के स्वामी अग्रसेन को युद्ध में पराजित करने का वर्णन प्राप्त होता है। इसी पुराण के 74वें अध्याय में रात्रिकाल में युद्ध स्थगित करके श्रीकृष्ण पारियात्र पर्वत को वरदान देते हैं।[7] एवं गंगा का स्मरण करके बिल्व और गंगाजल पर महादेव जी का आवहन करके उन बिल्वोदकेश्वर की पूजा और स्तुती करना महादेव जी का उन्हें अभीष्ट वर देकर दैत्यों को मारने का आदेश देना तथा पारियात्र पर्वत पर भगवान का निवास एवं उनकी प्रतिमा के पूजन की महिमा हैं 75वें अध्याय में श्रीकृष्ण और इन्द्र का पुनर्युद्ध, उत्पातों का प्राकट्य ब्रह्म जी की आज्ञा से कश्यप और अदिति का बीच में आकर दोनों को युद्ध बन्द कराने का वर्णन वर्णित मिलता हैं साथ ही अदिति की आज्ञा से पारिजात सहित द्वारकागमन पारिजात से द्वारकावासियों की प्रसन्नता एवं श्रीकृष्ण का सगे सम्बन्धियों को पारिजात दिखाकर पुनः स्वर्ग में पहुँचाने की कथा वर्णित है।

हरिवंश पुराण के अलावा विष्णुपुराण के पञ्चम अंश में नरकासुर का देवताओं, सिद्धों, असुरों और राजाओं आदि की कन्याओं का बलपूर्वक अपहरण[8] वरुण का जलवर्षक छत्र तथा मन्दराचल का मणि–पर्वत नामक श्रृङ्ग छीनना, देवमाता आदिति के कुण्डलों का अपहरण एवं इन्द्र के ऐरावत को भी छीनने की दुनीर्ति का इन्द्रादि देवताओं का भगवान श्रीकृष्ण से वर्णन करना और श्रीकृष्ण का सत्यभामा सहित प्राग्ज्योतिष्पुर के लिये प्रस्थान, [9] सुदर्शनचक्र से नरकासुर का वध, पृथ्वी का अदिति के कुण्डलों को श्रीकृष्ण को देने का विवरण मिलता है।[10] इसके उपरान्त श्रीकृष्ण रत्नों सहित 16 हजार कन्याओं को मुक्त कर द्वारका भेजते हैं, और स्वयं इन्द्र सहित जाकर देवमाता के कुण्डल लौटाते हैं। उस समय अदिति की आज्ञा मानकर इन्द्र ने श्रीकृष्ण का अत्यन्त मान सहित सत्कार एवं पूजन किया परन्तु परिजात पुष्पों से सुशोभित इन्द्राणी ने सत्यभामा के मानुषी होने के कारण उन्हें पारिजात पुष्प नहीं दिये। इसके उपरान्त नन्दन वन में अमृत से उत्पन्न पारिजात को देखकर सत्यभामा श्रीकृष्ण से कहती हैं कि यदि आप मुझे अनन्यतमा प्रियतमा मानते हैं तो इस वृक्षराज को मेरे भवन में ले चलो। सत्यभामा के वचन सुनकर श्रीकृष्ण ने इन्द्र को युद्ध में पराजित कर, पारिजात को स्वर्ग से लाकर द्वारका पुरी में सत्यभामा के प्रांगण में स्थापित कर दिया।

विष्णुपुराण के अतिरिक्त पद्मपुराण के उत्तरखण्ड अध्याय 275 में भी पारिजात की कथा इस रूप में निहित मिलती है कि भूमि से उत्पन्न नरकासुर नामक एक महान असुर उत्पन्न हुआ था। जिसने देवताओं को जीत कर देवमाता अदिति के कुण्डल कुबेर की मणियाँ, पद्मनाभ शंख एवं देवकन्याओं का अपहरण कर लिया था। देवताओं की प्रार्थना सुनकर श्रीकृष्ण द्वारा नरकासुर का वध कर देवकन्याओं को मुक्त करना। सत्यभामा सहित जाकर देवमाता को कुण्डल वापिस करना, श्रीकृष्ण की पूजा सत्कार, एवं शची

द्वारा सत्यभामा के अवहेलना करना, [11] सत्यभामा का क्रोधित होकर शची के घर से जाना, शची के पारिजात वृक्ष का घमण्ड सत्यभामा द्वारा श्रीकृष्ण के साथ वर्णन करना। कृष्ण का क्रोधित होकर पारिजात का हरण करना, इन्द्र और कृष्ण का युद्ध, इन्द्र की पराजय, तदनन्तर श्रीकृष्ण द्वारा पारिजात हरण का कारण बताना[12] और पारिजात वृक्ष लेकर द्वारकापुरी में आना इस प्रकार पारिजात सम्बन्धी कथा का वर्णन पद्मपुराण में वर्णित मिलता है।

इस प्रकार पारिजात हरण की पौराणिक विषय–वस्तु के विवेचन से स्पष्ट है कि शेषश्री कृष्ण ने हरिवंश पुराण की कथावस्तु से प्रभावित होकर ही इस की कथावस्तु का सृजन किया है। विष्णुपुराण एवं पद्मपुराण की कथावस्तु के साथ श्री मद्भागवतपुराण में वर्णित पारिजात सम्बन्धी वृतान्त को उन्होंने स्पर्श नहीं किया है। अतएव पारिजातहरण का मूलाधार केवल हरिवंश ही सिद्ध होता है।

सन्दर्भ

1. सोऽभिपत्य महाबाहुदीर्घमध्वानमल्पवत्।
   पूजितोदेवराजेन ददृशेयादवीं पुरीम्।।
   तथा कर्ममहत् कृत्वा भगवान वासवानुजः।
   उपायाद् द्वारकां कृष्णः श्रीमान् गरुडवाहनः।।
2. इतीदमुक्त्वा पुनरेवशोभना मुमोचतोयंनयनोद्भवंसती।
   ग्रह्यप्रीतंहरिवाससः शुभाः पदान्तमाधायमुखेशुचिस्मिता।। ह० पु० 2/65
3. कोऽप्ययंदारूरित्याहुरजानन्तोयतोजनाः।
   कोविदार इतिख्यातस्ततः स सुमहातरुः।।
   मन्दारः कोविदारश्वः पारिजातश्च नामभिः।
   स वृक्षो जायते दिव्योयस्यैततकुसुमोतमम्।। ह० पु० 2/67/71–72
4. इति प्रवाच्यो यदिसामपूर्वकम् प्रयाच्यमानो न तरुं प्रयच्छति।
   सुनिश्चयं मद्गमनायसर्वद्यत्वयापिकार्यः खलुतत्रनिश्चयः।। ह० पु० 68/40
5. ततः कृष्णः शरैस्तीक्षणैर्देवराजगजोतमम्।
   विभेदाशनिसंकाशैः प्रहसन्तिवभारत।।
   विण्याधगरुडवज्री दिव्यैः शरवरैस्तथा।
   वाणाश्चिच्छेद सहसा केशवस्यतपस्विना।। ह० पु० वि० प 73/19–20
6. तथेत्युक्तमुक्त्वा च यादवेन्द्रबलावुभौ।
   गत्वा यथोक्तमुक्त्वा च यादवेन्द्रबलावुभौ।।
   नाडिकान्तर मात्रेण पुनस्तं देशमाययौ।
   दारुकेणसमायुक्तं रथमास्थााय भारत।। ह० पु० वि० प० 73/104–105
7. तमारुह्यस्थं कृष्णः पारियात्रं गिरियौ।
   यत्रैरावतमास्थायस्थितः सुरपति प्रभुः।। ह० पु० वि० प० 74/1
8. दैवसिद्वासुरादीनां नृपाणां च जनार्दन।
   ह्रत्वा तु सोऽसुरः कन्या रुरुधेनिणमन्दिरे। विष्णु पु० प० अ० 20/9
9. सञ्चिन्त्यागतमारुह्य गरुड़ गगडंगगनेचरम्।
   सत्यभामां समारोप्ययये प्राग्ज्योतिषपुरम्।। विष्णु० पु० पं० अ 20/14
10. हते तु नरके भूमिर्गृहीत्वा दितिकुण्डले।
    उपतस्थेतजगन्नाथंवाक्यंचेद मथाब्रवी।। विष्णु० पु० पं० अ 20/33
11. अनर्हामानुषीचेयं देवांर्ह सकुसुमंशुभम्।
    इति कृत्वा मतिं तस्ये न ददौ कुसुमानि वा।। पदम० पु० 276/88
12. शच्याऽवमानितासत्यातव गेहेसुरेश्वर।
    अदत्त्वा पारिजातनिसत्यायै सा पुलोमजा।। पद्म० पु० 276/102